प्रखर 3

1. भाषा और व्याकरण

मनुष्य हो या जीव-जंतु सभी अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए किसी न किसी माध्यम का प्रयोग तो करते ही हैं। अपनी बात को प्रकट करने या बताने के लिए जो माध्यम प्रयोग किया जाता है, वही भाषा कहलाता है। मनुष्य की तरह पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है।

- शिक्षक/शिक्षिका सर्वप्रथम पाठ पृष्ठ 3 पर दिए चित्रों के माध्यम से बच्चों से प्रश्न पूछें-
  - पहले चित्र में गाय का बछड़ा कैसे अपनी माँ को बुला रहा है।
  - दूसरे चित्र में दो कुत्ते किस आवाज़ या ध्वनि में लड़ रहे हैं।
  - तीसरे चित्र में कौए क्या आवाज़ निकालकर एक-दूसरे पर उछल रहे हैं।
  - चौथे चित्र में मेंढक किस आवाज़ में अपनी खुशी प्रकट कर रहा है।
  - पाँचवे चित्र में मोर कैसी आवाज़ निकालकर अपने पंख फैला रहा है।

  बच्चों के उत्तर देने के उपरांत उन्हें बताएँ कि ये सब ध्वनि या आवाज़ ही इन पशु-पक्षियों की बोली है।
- पृष्ठ 4 पर दिए चित्रों के बारे में बच्चों से चर्चा करें।
  - पहले चित्र में ट्रैफ़िक पुलिसवाला संकेतों के माध्यम से वाहनों को रुकने-चलने का संकेत दे रहा है। बच्चों को बताएँ, यह सांकेतिक भाषा है पर इस प्रकार की भाषा में हर बात नहीं बता सकते।
  - दूसरे चित्र में अध्यापिका बोलकर बच्चों को पाठ पढ़ा रही हैं और बच्चे सुनकर समझ रहे हैं।
  - तीसरे चित्र में पिता जी अखबार में लिखी-छपी खबरों को पढ़ रहे हैं।

  अब बच्चों को समझाएँ, इस प्रकार बोलकर, सुनकर, लिखकर, पढ़कर अपनी बात प्रकट करना ही भाषा कहलाता है।
- बच्चों को भाषा के दोनों रूपों—मौखिक और लिखित से अवगत करवाएँ। इसके लिए अपने आसपास के या दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों का सहारा लिया जा सकता है। जैसे - टी॰वी॰ देखना, संगीत सुनना, माइक पर बोलना, आपस में बातचीत करना, ये सब मौखिक भाषा कहलाते हैं।

  गृहकार्य करना, परीक्षा देना, कंप्यूटर पर काम करना, पत्र लिखना आदि लिखित भाषा है।
- शिक्षक/शिक्षिका बच्चों की पाठ में उपस्थिति देखने के उद्देश्य से बीच-बीच में कुछ प्रश्न पूछें।
- बच्चों को बताएँ, हिंदी हमारे देश भारत की मातृभाषा होने के साथ-साथ राष्ट्रभाषा भी कहलाती है। हिंदी भारत के अधिकांशतः क्षेत्रों में बोली-पढ़ी तथा समझी जाती है इसलिए इसे मातृभाषा का दर्जा मिला हुआ है। इस बात से बच्चों को अवगत कराएँ।
- बच्चों को देश की तथा संसार की भाषाओं से भी अवगत कराएँ।
- उन्हें भाषा की लिपियों से भी परिचित करवाएँ। उन्हें बताएँ, प्रत्येक भाषा को लिखने का एक अलग तरीका या ढंग होता है, जिसे लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की लिपि के लिखित चिह्न अलग-अलग होते हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी, अंग्रेजी की रोमन तथा उर्दू की लिपि फ़ारसी है।
- बच्चों को बताएँ, हिंदी की **देवनागरी लिपि के चिह्न - अ आ इ क ख च ट त** आदि वर्णमाला के सभी वर्ण हैं।
- व्याकरण का सही बोध होना अत्यंत आवश्यक है। यह बताते हुए बच्चों को भाषा के व्याकरण से परिचित करवाएँ। उन्हें समझाएँ, भाषा को शुद्ध रूप से लिखना-पढ़ना, बोलना, व्याकरण ही बतलाता है।
- बच्चों का व्याकरण बोध जानने के लिए उनसे शब्दों की वर्तनी लिखवाकर या किसी शब्द या वाक्य का उच्चारण करवाकर देखा जा सकता है।
- पाठ के अभ्यास बच्चों से करवाएँ। यदि आवश्यकता हो तो यथासंभव बच्चों को समझाते हुए मदद भी करें।